प्रथम अध्याय

"सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

प्रथम अध्याय

''सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

1.1 व्यक्ति परिचय -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार थे। वे सिर्फ उपन्यासकार ही नहीं बल्कि कवि, कहानीकार, नाटककार, एकांकीकार तथा बाल-साहित्यकार के रूप में विख्यात हैं। उनकी महत्ता के बारे में कृष्णप्रताप सिंह का कहना द्रष्टव्य होता है कि, ''सर्वेश्वर ने अपना साहित्यिक जीवन किसी एक विधा में बंध कर नहीं जिया और तीसरे सप्तक के कवि के रूप में सामने आने के आगे-पीछे उनकी कई कहानियाँ, लघु-उपन्यास 'सोया हुआ जल' और उपन्यास 'उड़े हुए रंग' छप चुके थे। कथा संग्रह 'अंधेरे पर अंधेरा' और 'कच्ची सड़क' के अतिरिक्त कई कहानियों के अनुवाद भी लिखे। 'बकरी' के अतिरिक्त उनके नाटकों में 'लड़ाई', 'अब गरीबी हटाओ' और 'हवालात' आदि शामिल हैं, तो लघु-उपन्यास 'पागल कुत्तों का मसीहा' के बिना भी उनकी चर्चा पूरी नहीं होती। 'पराग' के संपादन के दौरान उन्होने बाल कविताएँ भी लिखीं।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का व्यक्तित्व बहुमुखी है। किसी भी साहित्यकार के जीवन पर समसामायिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। साहित्यकार के व्यक्तित्व पर सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियाँ प्रभाव डालती हैं। अतः उसका अध्ययन करने के लिए उस साहित्यकार का व्यक्तित्व देखना आवश्यक है। अतः सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का व्यक्तित्व इस प्रकार है-

1.1.1 जन्म तिथि तथा जन्म स्थान -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का जन्म गुरुवार के दिन 15 सितंबर, 1927 ई. को उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के पिकौरा नामक गाँव में हुआ। उनके माता-पिता उन्हें घर में मुन्नाबाबू नाम से पुकारते थे।

---

1. संपादक राजेंद्र दर्डा - दैनिक लोकमत 'समाचार', कृष्णप्रताप सिंह, रविवार, 20 मई, 2007, पृ. 2

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

1.1.2 माता-पिता -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की माता का नाम श्रीमती सौभाग्यवती देवी था। वह शासकीय हाइस्कूल में अध्यापिका के रूप में कार्यरत थीं। उन्होने सर्वेश्वरदयाल सक्सेना को वात्सल्य, लाड-प्यार और दुलार के साथ प्रगति के पथ पर अग्रेसित किया। उन्हें कहानियाँ पढ़ने का शौक था। अपनी माँ के बारे में सर्वेश्वर जी स्वयं लिखते हैं कि "माँ अध्यापन कार्य करती और एक लंबी बीमारी क्षय-ग्रस्त से जूझती मुझसे यह कहकर चल बसी की महत्त्वाकांक्षा से हीन जीवन का कोई अर्थ नहीं है।"[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की माँ जीवन में महत्त्वकांक्षा को महत्त्वपूर्ण मानती थी।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के पिता का नाम विश्वेश्वरदयाल सक्सेना था। वे स्वयं कविता प्रिय आदमी थे। लेकिन वे बेटे सर्वेश्वरदयाल को कविता करने के लिए मना करते थे। उनका मानना था कि कवि भौतिक साधनों को एकत्र जुटाने में सफल नहीं होता। वे व्यवसाय को महत्त्व देते थे किंतु व्यवसाय में उन्हें विशेष आम्दनी प्राप्त नहीं होती। उनके व्यवसाय के बारे में कृष्णदत्त पालीवाल लिखते हैं कि "पिता स्वतंत्र रूप से जीने की आकांक्षा के लिए दुकानदारी, फोटोग्राफी, रंगसाजी आदि जीविका के अनेक साधन बदलते-बदलते अंत में नौकरी करने के लिए विवश हुए और पचपन वर्ष तक आते-जाते 'संतोष परम धन है' का संदेश देकर विदा हो गए।"[2] उक्त कथन से द्रष्टव्य होता है कि सर्वेश्वरजी के पिता व्यवसायाभिमूक व्यक्ति थे। सन् 1957 में विश्वेश्वरदयाल सक्सेना की मृत्यु हो गई।

1.1.3 परिवार -

सर्वेश्वरजी को एक भाई और एक बहन थी। भाई का नाम श्रद्धेश्वर और बहन का नाम सुशिला प्रभा था। सर्वेश्वर जी ने 23 जून, 1947 को सच्चिदानंद वर्मा की पुत्री आनंदी देवी से विवाह किया। सन 1951 में उन्हें अभिजीत नामक पुत्र रत्न हुआ। उसके बाद 1957 में विभा

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - संपूर्ण गद्य रचनाएँ, खंड - 3, पृ. 12,
2. डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का रचना कर्म, पृ. 17

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

का और 1962 में शुभा नामक लड़की का जन्म हुआ। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के परिवार पर आर्य समाज का प्रभाव था। वे मूर्ति-पूजा, पूजा-पाठ के प्रति आस्था नहीं रखते थे। उन्होंने अंधविश्वास और जाँति-पाँति के बंधनों का सदैव विरोध किया। उनके परिवार के बारे में डॉ. विजय प्रकाश मिश्र लिखते हैं, ''सक्सेना जी को सुशिक्षित परिवार में जन्म लेने और सुसंस्कृत, सुसभ्य परिवार में पलने और बढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।''[1] उक्त कथन से ज्ञात होता है कि उनका परिवार सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत था।

1.1.4 बचपन -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी ने अपना बचपन बस्ती जिले के पिकौरा नामक गाँव में बिताया। उनके बचपन के बारे में कृष्णदत्त पालीवाल लिखते हैं कि ''उनका बचपन हरे भरे खेतों, तालों और फूलों भरे गाँव में बीता।''[2] उनके घर के पास एक अनाथ आश्रम था। उसमें रहनेवाले बच्चों की दूरावस्था को देखकर उनके बाल मन पर गहरा आसर पड़ा और इसी कारण उन्हें बच्चों के प्रति सहृदयता की भावना निर्माण हुई। बचपन से ही माता की ममता सर्वेश्वरदयाल सक्सेना को मिलती रही, परंतु पिता के सक्त स्वभाव के कारण कड़े अनुशासन का पालन करना उनके लिए बहुत कठिन था। बचपन से ही सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का झुकाव साहित्य की ओर था और मैथिलिशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी उनके प्रिय कवि थे।

1.1.5 शिक्षा -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा बस्ती के गवर्नमेंट स्कूल से पूरी की। उन्हें नौवीं की कक्षा में क्रांतिकारी कार्यों के कारण कक्षा से बाहर निकाल दिया था। सन् 1944 में क्वींस कॉलेज, बनारस में इंटरमीडिएट की परीक्षा दी। सन् 1946 में बी. ए. किया और सन् 1949 में प्रयाग विश्वविद्यालय, इलाहाबाद से एम्. ए. की उपाधि हासिल की। उनके एम्. ए. में विजयदेवनारायण साही सहपाठी थे। उनके शिक्षकों के बारे में डॉ. कल्पना अग्रवाल बताती

---

1. डॉ. विजय प्रकाश मिश्र - हिंदी के प्रतिनिधि कवि, पृ. 300
2. भाषा - सं. जगदीश चतुर्वेदी, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - अहिस्ता मत चलो-दौडो, पृ. 90

हैं कि ''अपने शिक्षकों में वे डॉ. धीरेंद्र वर्मा, डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' तथा डॉ. रामकुमार वर्मा की बड़ी तारीफ करते थे।''[1] उक्त कथन से कहना सही होगा कि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना अपने शिक्षकों के प्रति आदर रखते थे।

1.1.6 नौकरी -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने पढ़ाई पूरी करने के बाद सबसे पहले इलाहाबाद में सन् 1949 में ए. जी. ऑफिस में. यु. डी. सी. के पद पर कार्य किया। उसके पश्चात दिल्ली के आकाशवाणी केंद्र के समाचार विभाग में सन् 1955 में हिंदी अनुवादक के रूप में कार्य किया था। सन् 1960 में आकाशवाणी लखनऊ में सहायक प्रोड्यूसर के पद पर कार्यरत रहे। किंतु सन् 1964 में उनका तबादला पहले भोपाल और बाद में इंदौर हो गया था। सन् 1964 में उन्होंने सहायक प्रोड्युसर पद की नौकरी को त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद सन् 1964 में वे 'दिनमान' पत्रिका में उपसंपादक के रूप में नियुक्त हुए। वे सन् 1967 में 'दिनमान' के प्रमुख संपादक के रूप में कार्यरत रहे। उनके संपादन पद के बारे में डॉ. कालिचरण स्नेही लिखती हैं कि ''आपने एक ओर प्रबुद्ध एवं जागरूक पाठकों के लिए 'दिनमान' जैसे पत्र का संपादन किया तो दूसरी ओर बालसुलभ बाल-मनोवृत्ति की पत्रिका 'पराग' का अक्तूबर, 1982 में संपादन कार्य संभाला।''[2] अतः सर्वेश्वर जी ने जीविका चलाने के लिए विविध क्षेत्रों में कार्य किया।

1.1.7 दांपत्य जीवन -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का आर्थिक अभावग्रस्तता के कारण उन्हें अपने दांपत्य जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। बिमारी के कारण सन् 1954 में उनके बेटे अभिजीत की मृत्यु हो गई। बेटे के मृत्यु के गम से बाहर आने के पूर्व ही 4 जुलाई, 1966 में उनकी पत्नी विमला की भी मृत्यु हुई। पत्नी की मृत्यु के पश्चात् विभा और शुभा की पालण-पोषण की जिम्मेदारी उनपर आ गई। इस कारण उनका दांपत्य जीवन दर्द से भरा था।

---

1. डॉ. कल्पना अग्रवाल - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना व्यक्ति और साहित्य, पृ. 15
2. डॉ. कालीचरण 'स्नेही' - सर्वेश्वर और उनका साहित्य, पृ. 10

1.1.8 देहावसन -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जीवन के अंतिम दिनों में सितंबर, 1982 में बाल-पत्रिका का संपादन कार्य करते थे। 15 सितंबर, 1983 को उन्होंने अपना 57 वाँ जन्मदिन मनाया और इसी बीच सन् 23 सितंबर, 1983 ई. में रात दस बजे दिल का दौरा पड़ने के कारण उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के कारण हिंदी साहित्य को जो क्षती हुई उसके बारे में डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल लिखते हैं कि ''हिंदी साहित्य से एक ऐसी आवाज छिन गई है जो अन्याय, गरीबी और अत्याचार के खिलाफ निर्भय होकर बोलती थी।''[1]

1.2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के बाह्य एवं आंतरिक व्यक्तित्व के पक्ष पर यहाँ संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत है -

1.2.1 बाह्य व्यक्तित्व -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का बाह्य व्यक्तित्व आकर्षित था। उनका व्यक्तित्व देखते ही सब मोहित हो जाते थे। उनके बाह्य व्यक्तित्व के बारे में डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल का कथन द्रष्टव्य है, ''सांवले चेहरे पर लंबी नोकदार नाक थी, जो उनके भीतर के पैनेपन को एक निगाह में ही बता देती थी। पाजामें के ऊपर लंबा कुर्ता पहने हुए जब वे किसी सभा, संस्था में जाते थे तो उनका व्यक्तित्व देखते ही बनता था। तन कर बोलते थे और मित्रों से गप लगाने में मजा आता था।''[2] उक्त कथन से सर्वेश्वर जी के बाह्य व्यक्तित्व का रूप दृष्टिगोचर होती है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना विनोदप्रिय व्यक्ति थे। वे जहाँ भी जाते, विनोद पूर्णता के कारण वहाँ का वातावरण हर्षोल्लासित करते थे। बचपन ग्रामीण परिवेश में बीतने के कारण उनका रहन-सहन अत्यंत साधारण था। उनको शहरी चमक-दमक की दुनिया पसंद नहीं थी।

---

1. भाषा, संपादक जगदीश चतुर्वेदी, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - अहिस्ता मत चलो-दौड़ो, कृष्णदत्त पालीवाल, पृ.90
2. भाषा, त्रैमासिक, संपादक जगदीश चतुर्वेदी, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : अहिस्ता मत चलो-दौड़ो, कृष्णदत्त पालीवाल, पृ. 91

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

1.2.2 आंतरिक व्यक्तित्व -

सर्वेश्वरजी का बाह्य व्यक्तित्व जितना आकर्षक था उतना ही उनका आंतरिक व्यक्तित्व प्रभावशाली था। मेधावी, कलाप्रेमी, विभिन्न रचनाकारों से प्रभावित, स्पष्टवादी, भावुक, विद्रोही, मानवतावादी, समाजसेवी तथा अलिप्तवादी आदि उनके आंतरिक व्यक्तित्व की विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

1.2.3 मेधावी व्यक्तित्व -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना बचपन से ही प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने आर्थिक अभाव के कारण स्वयं के बलबूते पर अपनी पढ़ाई पूरी की। उन्होने साहित्य लिखने का प्रारंभ अल्प आयु में ही शुरू किया था। इस बारे में डॉ. विजय प्रकाश मिश्र लिखते हैं- ''सर्वेश्वरजी पढ़ने में रुचि लेनेवाले प्रतिभावान विद्यार्थी थे।''[1] परिवार शिक्षित तथा सुसंस्कृत होने के कारण वे बचपन से ही साहित्य के प्रति आकर्षित हुए। प्रारंभ में उन्होने कविता तथा कहानी लिखना शुरू किया। उनकी पहली रचना के बारे में कृष्णदत्त पालीवाल लिखते हैं, ''उनकी पहली रचना 'माधुरी' सन् 1944 जनवरी, अंक में छपी थी - जिसे पढ़कर माँ, प्रसन्न हुई थी और पिताजी क्रोधित।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपनी आयु की 17 वे साल से ही कविता तथा कहानियाँ लिखना शुरू किया था।

1.2.4 कलाप्रेमी -

संसार में हर एक मनुष्य किसी-न-किसी कला के प्रति आकर्षित रहता ही है। सर्वेश्वर जी कला के प्रति रुचि रखते थे। उनके कलाप्रियता के बारे में डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल का कथन द्रष्टव्य है, ''नृत्यांगना स्वप्न सुंदरी हो या उमा शर्मा, चित्रकार हिम्मतशाह हो या स्वामिनाथन सभी से सर्वेश्वर की छनती थी। वे इन कलाओं में रमें रहते थे - समझते-समझाते थे। अनेक

---

1. डॉ. विजय प्रकाश मिश्र - हिंदी के प्रतिनिधि कवि, पृ. 301
2. भाषा, त्रैमासिक, संपादक जगदीश चतुर्वेदी, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - 'अहिस्ता मत चलो-दौड़ो' कृष्णदत्त पालीवाल, पृ. 91

ललित कलाओं के लालित्य-बोधीय सामंजस्य ने सर्वेश्वर जी के कलाकार को आँख-नाक की चेतना में पैना कर चौकन्ना कर दिया था।''[1] उक्त कथन से कहना सही होगा कि सर्वेश्वरजी बचपन से ही चित्रकला, संगीत, नृत्य और नाटक के प्रति आकर्षित थे।

1.2.5 विभिन्न रचनाकारों से प्रभावित -

लेखक के व्यक्तित्व का विकास और दिशा निर्धारण करने में पारिवारिक सदस्य अध्यापक तथा विभिन्न साहित्यकार का योगदान होता है। उनके व्यक्तित्व पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस तथा राममोहन लोहिया का प्रभाव था। इस बारे में डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल लिखते हैं कि ''उनके मन में नेताजी सुभाषचंद्र के प्रति बड़ा आदर था। लोहिया-विचार-दर्शन उन्हें जीवन और विचार में खरा लगता था। लोहिया की बौद्धिक सच्चाई की छाप मन पर गहरी पड़ी।''[2] अतः स्पष्ट है कि उनके व्यक्तित्व पर लोहिया के विचार दर्शन का प्रभाव दिखाई देता है।

1.2.6 स्पष्टवादिता -

स्पष्टवादिता सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के व्यक्तित्व की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। स्पष्टवादिता के कारण उन्होने समाज में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, शोषण, भ्रष्टाचार, बाह्याडंबर तथा बनावटीपण को अपने साहित्य के द्वारा उजागर किया। वे अपनी स्पष्टवादिता स्वभाव के बारे में स्वयं लिखते हैं कि ''मेरे तीन सबसे बड़े साथी-विपत्ति, संघर्ष और निराशा बचपन से रहे हैं और जैसा मेरा ढर्रा है आगे भी रह सकते हैं। इनसे एक बात मैंने सीखी है, खरी बात कहने में सबसे आगे रहना। अपने साहित्य के माध्यम से भी मैं खरी बात ही कहना चाहता हूँ। क्या कविता, क्या कहानी सबमें अभिव्यक्ति के लिए व्यंग्य मेरा सबसे बड़ा साथी है। लोगों का खयाल है रोजमर्रा के जिंदगी में भी व्यंग्य अधिक बोलता हूँ, इसीलिए दोस्त से अधिक दुश्मन बनाता हूँ। बनावट मेरा

---

1. भाषा, संपादक जगदीश चतुर्वेदी, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - 'अहिस्ता मत चलो-दौड़ो' कृष्णदत्त पालीवाल, पृ. 96
2. भाषा, संपादक जगदीश चतुर्वेदी, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - 'अहिस्ता मत चलो-दौड़ो' कृष्णदत्त पालीवाल, पृ. 93

सबसे बड़ा शत्रु है। इसे न अपने में पनपने देता हूँ, न दूसरों में स्वीकार करता हूँ।''[1] उक्त कथन में उनकी स्पष्टवादिता दिखाई देती है।

1.2.7 भावुकता -

भावुकता सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के संवेदनशील हृदय का प्रमाण है। उनकी अनेक रचनाओं में भावुकता की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। उनकी भावुकता के बारे में कृष्णदत्त पालीवाल का कथन द्रष्टव्य है, ''एक वर्ष पहले जब साही जी का निधन हुआ तो सर्वेश्वर टूट गए थे। सर्वेश्वर जी साही जी के इस वियोग से इतने खिन्न रहते थे कि वे इसे 'अपनी भी छोटी सी मौत' कहते थे।''[2] उक्त कथन से कहना सही होगा कि वे एक भावुक, सहृदय तथा संवेदनशील व्यक्ति थे।

1.2.8 ग्रामीण जीवन से लगाव -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का बचपन अधिकतर ग्रामीण परिवेश में बीत गया। इसी कारण उनके साहित्य में ग्रामीण वातावरण समस्त रूपों में दृष्टिगोचर होता है। इस बारे में कृष्णदत्त पालीवाल का कथन द्रष्टव्य है- ''सर्वेश्वर जी की रचना-यात्रा की पहचान महानगरीय में नहीं, ग्रामीण जीवन के सधन और वास्तविक चित्रण में है। उनकी संपूर्ण रचनाधर्मिता ग्रामीण जीवन को समर्पित है। उनका शरीर शहरों में रहा, लेकिन वे गाँव को कभी भी भूल नहीं सके। गाँवों को ठीक से पहचानने के कारण सर्वेश्वर जी देश की आत्मा का साक्षात्कार करते रहे हैं।''[3] अतः यह स्पष्ट होता है कि उनका ग्रामीण जीवन के प्रति लगाव दृष्टिगोचर होता है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : संपूर्ण गद्य रचनाएँ भाग-3, पृ. 11
2. भाषा, संपादक जगदीश चतुर्वेदी, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - 'अहिस्ता मत चलो-दौड़ो' कृष्णदत्त पालीवाल, पृ. 91
3. वही, पृ. 95

1.2.9 गरीबों के प्रति आस्था -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के समय में समाज में दो वर्ग स्थित थे। पहला पूँजीपति वर्ग और दूसरा शोषित, गरीब तथा दीन वर्ग। सर्वेश्वर जी ने स्वयं का जीवन गरीबी में बिताने की वजह से वे गरीबों की व्यथा, दयनीय स्थिति, पीड़ा, दर्द आदि से परिचित थे। इस कारण उन्होंने अपनी रचनाओं में गरीब या मजदूरों को केंद्र में रखकर साहित्य का सृजन किया।

1.2.10 क्रांतिकारी व्यक्तित्व -

सर्वेश्वर जी का बचपन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बीता गया। वे आयु के तेरह-चौदह साल से ही क्रांतिकारियों की कहानियाँ पढ़ना, उनके त्याग और बलिदान के किस्से चोरी-छिपे पढ़ना आदि में रुचि रखते थे। इस बारे में वे स्वयं लिखते हैं कि " 'लाहौर के शहीद', 'चाँद का बलिदान' अंक ऐसी अनेक पुस्तकें मेरे पास गुप्त रूप से रहती थीं। जिन्हें इधर-उधर पढ़ने के लिए वितरित भी करता था और महज इतने से देशभक्त माना जाता था। क्योंकि उन दिनों इन पुस्तकों का रखना विस्फोटक पदार्थ रखने के समान था।"[1] अतः कहना सही होगा कि सर्वेश्वर जी के व्यक्तित्व में क्रांतिकारी का गुण दिखाई देता है।

1.2.11 समाजसेवक -

सर्वेश्वरदयालय सक्सेना समाज सेवा के प्रति हमेशा तत्पर रहते थे। जहाँ उनकी आवश्यकता लगती थी वहाँ वे तुरंत पहुँचते। गॉव में जब कभी किसी को चेचक की बीमारी हो जाती, तो वे वहाँ उनकी दिन-रात सेवा करते थे। अपने मित्र के दुःख को अपना दुःख मानकर उसकी समस्याओं को सुलझाते थे। उन्होंने अनाथाश्रम के बच्चों की भी सेवा की। उनका हृदय और हाथ हमेशा दूसरों की सेवा करने के लिए तत्पर रहता था। उन्होंने अपना जीवन दूसरों की सेवा करने में बीताया।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - संपूर्ण गद्य रचनाएँ, भाग-3, पृ. 14

1.2.12 लोक-कल्याण की भावना -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना न केवल अपनी वेदना और पीड़ा पर ही नहीं सोचते थे बल्कि उनमें लोककल्यान की भावना (विश्वकल्याण की पीड़ा) भी व्याप्त थी। मानवतावादी स्वर उनके साहित्य की प्रमुख प्रेरणा थी। वे समाज के दीन-हीन, पीड़ित, गरीब, दूख, दर्द, असाह्य लोग तथा अन्याय-अत्याचार से पीड़ित लोग आदि के प्रति सहानुभूतिशील थे।

1.2.13 अलिप्तावादी -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जीवन को कुछ अलग तरीके से जीना चाहते थे। उनका स्वभाव मिलनसार है। परंतु वे लोगों से बहुत कम संबंध रखते थे। उनका मानना है कि संबंध रखने के लायक कोई दिखाई नहीं देता और यद्यपि किसी से मेल-जोल होता है, तो वह जल्द ही टूट जाता है। वे स्वयं को दूसरे के संस्कार, रुचि, विचार आदि से इतना भिन्न मानते हैं कि उसके साथ चलने पर भी मुश्किलें खड़ी हो जाती हैं। वे अलिप्तता के संबंध में स्वयं लिखते हैं कि ''अपना कोई सही अर्थों में साथी न होने का रोना मैं नहीं रोता।''[1] उक्त कथन से कहना सही होगा कि सर्वेश्वर अलिप्तवादी होने का कोई पश्चाताप महसूस नहीं करते। सर्वेश्वर जी खुद को किसी वाद या दल के घेरे में नहीं बांधना चाहते हैं। वे उनसे अलिप्त रहना चाहते हैं। इस संबंध में डॉ. बच्चन सिंह का कथन द्रष्टव्य है कि ''सर्वेश्वरदयाल ने अपने को किसी दल विशेष-राजनीतिक दल विशेष से स्पष्टतः बाँधा नहीं है।''[2]

अतः सर्वेश्वर जी के व्यक्तित्व में मेधावी, कलाप्रेमी, स्पष्टवादी, भावुक, अलिप्तवादी तथा क्रांतिकारी आदि गुण मार्मिक रूपों में परिलक्षित होते हैं।

1.3 साहित्यिक रचनाएँ -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना विविधोन्मुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार हैं। वे प्रगतिशील कवियों में से एक प्रमुख हस्ताक्षर है। वे हिंदी साहित्य जगत् में कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। इसके

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - संपूर्ण गद्य रचनाएँ, भाग- 3, पृ. 10
2. डॉ. बच्चन सिंह - हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, पृ. 440

साथ-साथ वे उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार, बाल-साहित्य के लेखक, प्रखर पत्रकार, यात्रा-संस्मरणकार, एकांकीकार और कुछ पुस्तकों के संपादक भी हैं। सर्वेश्वर जी की अब तक की प्रकाशित रचनाएँ इस प्रकार हैं -

1.3.1 कविता संग्रह -

सर्वेश्वर जी 'तीसरे तार सप्तक' के प्रमुख कवियों में से एक हैं। उनकी कविताओं में मानवतावादी दृष्टि दिखाई देती है। इसी वजह से उनकी कविता उनके जीवन संघर्ष की सच्ची अभिव्यक्ति है। वे नये कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं उनके प्रकाशित काव्य-संग्रह निम्नतः -

अ. नं.	*कविता संग्रह का नाम*	*प्रकाशित वर्ष*
1.	काठ की घंटियाँ	1959
2.	बाँस का फूल	1963
3.	एक सुनी नाव	1966
4.	गर्म हवाएँ	1969
5.	कुआनो नदी	1973
6.	जंगल का दर्द	1976
7.	कविताएँ - 1	1978
8.	कविताएँ - 2	1978
9.	खूँटियों पर टँगे लोग	1982
10.	क्या कहकर पुकारूँ	1984
11.	कोई मेरे साथ चले	1985

1.3.2 कहानी-संग्रह -

सर्वेश्वर जी कवि के साथ-साथ कहानीकार के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। उन्होने सन् 1943 में 'क्षितिज के पार' पहली कहानी लिखी। जो वाराणसी से प्रकाशित 'क्षत्रिय मित्र' पत्रिका

में प्रकाशित हुई। सर्वेश्वर जी ने अपने साहित्य के माध्यम से जीवन की विसंगतियाँ, समाज व्याप्त भ्रष्टाचार, वर्ग संघर्ष का समूल विनाश किया। उनके प्रकाशित कहानी-संग्रह इस प्रकार हैं -

अ. नं.	*कहानी-संग्रह का नाम*	*प्रकाशित वर्ष*
1.	कच्ची सड़क	1978
2.	अंधेरे पर अंधेरा	1979
3.	बदलता हुआ कोण	1981

1.3.3 उपन्यास -

यथार्थवादी उपन्यासकार के रूप में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की अलग पहचान है। उनके प्रमुखतः तीन उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। इनमें से 'सोया हुआ जल' उपन्यास के प्रकाशन से साहित्य जगत् में हलचल मचा दी थी। उनके प्रकाशित उपन्यास इस प्रकार हैं -

अ. नं.	*उपन्यास के नाम*	*प्रकाशित वर्ष*
1.	सूने चौखटे	1974
2.	सोया हुआ जल	1977
3.	पागल कुत्तों का मसीहा	1977

1.3.4 नाटक -

सर्वेश्वरजी एक प्रभावशाली नाटककार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके नाटकों का विषय लोकधर्मी यथार्थता पर है। वे अपने नाटकों से आम आदमी के शोषण की समस्या, देश में व्याप्त गरीबी की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या आदि को स्पष्ट करते हैं। उनके प्रकाशित नाटक इस प्रकार हैं-

अ. नं.	*नाटकों के नाम*	*प्रकाशित वर्ष*
1.	बकरी	1974
2.	लड़ाई	1979
3.	अब गरीबी हटाओ	1981

1.3.5 एकांकी -

हिंदी साहित्य विधा में सर्वेश्वरजी एकांकीकार के रूप में भी विख्यात हैं। उन्होने एकांकी रचनाओं के माध्यम से समाज व्यवस्था के दूराचारों को स्पष्ट किया है। उसमें आम अ दमी के शोषण का चित्रण किया है। उनकी प्रकाशित एकांकियाँ इस प्रकार हैं -

अ. नं.	*एकांकी के नाम*	*प्रकाशित वर्ष*
1.	हवालात	1976
2.	रूपमती बाजबहादूर	1976
3.	होरी धूम मचोरी	1976
4.	कल भात आएगा	1979

1.3.6 बाल-साहित्य -

सर्वेश्वर जी बच्चों के प्रति लगाव रखते थे। इसी वजह से उन्होने अपने साहित्य में बाल-साहित्य को मार्मिक रूपों में स्पष्ट किया है। इस बारे में डॉ. विजय प्रकाश मिश्र की मान्यता है कि ''सर्वेश्वर जी का विशेष झुकाव बच्चों की ओर था। उनके मन में उनके विकास के प्रति एक ललक थी। यही कारण था कि कवि सक्सेना जी अपनी रचनाएँ बालोपयोगी साहित्य में प्रकाशनार्थ भेजते रहते थे।''[1] उनकी बाल-साहित्य की रचनाएँ इस प्रकार से -

1.3.6.1 बाल-कविताएँ -

सर्वेश्वर जी अन्य विधा की तरह बाल-कविता के रूप में प्रसिद्ध हैं। सर्वेश्वर जी के बाल-साहित्य के बारे में डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल कहते हैं कि ''सर्वेश्वर वयस्कों के कवि, कथाकार, नाटककार ही नहीं हैं, बच्चों की दुनिया के लोकप्रिय रचनाकार भी हैं।''[2] अतः कहना

---

1. डॉ. विजयप्रकाश मिश्र - हिंदी के प्रतिनिधि कवि, पृ. 301
2. भाषा, संपादक जगदीश चतुर्वेदी, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, 'अहिस्ता मत चलो-दौड़ो', कृष्णदत्त पालीवाल, पृ. 96

सही होगा कि सर्वेश्वर बच्चों की दुनिया में लोकप्रिय हैं। उनकी प्रकाशित बाल-कविताएँ इस प्रकार हैं -

अ. नं.	*बाल कविताओं के नाम*	*प्रकाशित वर्ष*
1.	बतूता का जूता	1971
2.	महंगू की टाई	1974
3.	बिल्ली के बच्चे	1973

1.3.6.2 बाल नाटक -

सर्वेश्वर जी ने बाल नाटकों में समाजवादी विचारों को स्पष्ट किया है। वे बाल नाटकों के माध्यम से बच्चों को अपने अधिकार के प्रति सचेत करते हैं। वे समाज में सामंजस्य और ईमानदारी लाना चाहते हैं। उनके प्रकाशित बाल नाटक इस प्रकार हैं-

अ. नं.	*बाल-नाटकों के नाम*	*प्रकाशित वर्ष*
1.	हाथी की पौं	1966
2.	लाख की नाक	1967
3.	भों भों खों खों	1975
4.	अनाप-शनाप	1978

1.3.7 यात्रा-साहित्य -

सर्वेश्वर जी ने अपने साहित्यिक जीवन में विदेश की यात्रा की है। वे भारत की ओर से भारतीय सांस्कृतिक मंडल के प्रतिनिधि के रूप में नेपाल की यात्रा पर गए थे। उन्होने सन् 1872 में सोवियत लेखक संघ से आयोजित 'पुश्किन काव्य समारोह' में भारत की ओर से प्रतिनिधि के रूप में यात्रा की। उनकी यात्रा-साहित्य की एक ही कृति प्रकाशित है। वह निम्नतः -

अ. नं.	*यात्रा साहित्य का नाम*	*प्रकाशित वर्ष*
1.	कुछ रंग कुछ गंध	1976

1.3.8 अनुवाद -

सर्वेश्वर जी अनुवाद लेखन में रुचि रखते हैं। उन्होने सोवियत देश की कुछ कहानियों का हिंदी में अनुवाद लेखन भी किया है। वह इस प्रकार है-

अ. नं.	*अनुवादित रचना का नाम*	*प्रकाशित वर्ष*
1.	सोवियत कथा-संग्रह	1978

1.3.9 संपादन -

सर्वेश्वर जी ने विविध पत्र-पत्रिकाओं में संपादन का कार्य किया है। उनके संपादकत्व की रचनाएँ इस प्रकार हैं-

अ. नं.	*संपादित कृति का नाम*	*प्रकाशित वर्ष*
1.	रक्तबीज	1977
2.	शमशेर नामक पुस्तक	1981
3.	अंधेरों का हिसाब	1981
4.	नेपाली कविताएँ	1982

1.3.10 पत्रकारिता -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना प्रतिभा संपन्न पत्रकार के रूप में विख्यात हैं। उन्होने साहित्यिक जीवन में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया है। विविध लेखों का संग्रह उन्होने एक ही रचना में किया है। वह इस प्रकार है-

अ. नं.	*रचना का नाम*	*प्रकाशित वर्ष*
1.	चरचे और चरखें	1986

1.3.11 पुरस्कार एवं सम्मान -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना को अनेक पुरस्कारों से गौरोन्वित किया गया। उन्हें साहित्य, पत्रकारिता एवं संपादन आदि कार्य के लिए विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। वे इस प्रकार हैं-

1. 'जंगल का दर्द' इस काव्य संग्रह के लिए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का 'स्तरीय पुरस्कार' सन् 1976 में मिला।
2. सन् 1979 में 'जंगल का दर्द' (काव्य संग्रह) के लिए मध्य प्रदेश सरकार की ओर से 'तुलसी पुरस्कार' से पुरस्कृत किया गया था।
3. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना को मार्च, 1981 को 'साहित्य कला परिषद' द्वारा सम्मानित किया गया था।
4. 'खूंटियों पर टँगे लोग' (काव्य संग्रह) को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था जो कि उन्हें मरणोत्तर दिया गया।

निष्कर्ष -

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का व्यक्तित्व कलाप्रेमी, साहसी, जिज्ञासू, संघर्षशील, समाजसेवी, मानवतावादी, अलिप्ततावादी, स्पष्टवादी, क्रांतिकारी तथा भावुक आदि विशेषताओं से परिपूर्ण दृष्टिगोचर होता है।
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने समाज में व्याप्त कुप्रथाओं एवं रूढ़ियों पर प्रहार करते हुए समाज सुधारने का प्रयास किया है।
3. गाँव की भीतरी-पीड़ा को सर्वेश्वरजी ने जिया और भोगा था। इस कारण उनके कथा-साहित्य में गाँव की पीड़ा, दुःख, कराह आदि दृष्टिगोचर होते हैं।
4. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना चिंतनशील, गहन अध्येता, विषय के प्रति न्याय देनेवाले बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार हैं।
5. 'तीसरे तार सप्तक' के प्रमुख कवि होते हुए भी सक्सेना जी ने कथा-साहित्य लेखन में भी अपनी क्षमता का परिचय दिया है।
6. उनके काव्य संग्रहों को ही पुरस्कृत किया गया है।
7. कवि सक्सेना कथाकार सक्सेना भी थे। उन्होने अपने बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है।